❀ श्रीश्रीभगवते गौरचन्द्राय नमः ❀

"श्रीश्रीराधाकृपाकटाक्षस्तवराजः"

श्रीश्रीविश्वनाथ-चक्रवर्त्ती-महोदय-विरचितेन भागवतीय-
"सारार्थदर्शिनो" टीकान्तर्गतराधाकुण्डोत्पत्ति-
महिमावर्णननिबन्धेनालङ्कृतः ॥

प्रथमावृत्तिः १०००
गौरपूर्णिमा, (फाल्गुनी)
संवत्-२०१३

प्रकाशक व अनुवादक-
कृष्णदास,
(कुसुमसरोवर वाले)
(मथुरा)

भज--निताइ गौर राधेश्याम।

जप--हरे कृष्ण हरे राम॥

परमाराध्य, संकीर्त्तन प्रचारक, प्रेममयविग्रह, श्रीराधा-
रमणचरणदासदेव (बड़े बाबाजी) के अनुगत,
नित्यधामगत, श्रीगुरुदेव बाबाजिमहाराज
१०८ श्री बाबा (रामदासजी) के
पुनीत स्मरण में यह ग्रन्थ
समर्पित है।

पुस्तक मिलने का पता—

(१) मोतीराम गुप्ता, भगवान भजन आश्रम,
बल्लीगंज, (वृन्दावन)

(२) श्री गोपालदास डागाजी,
ताडाशवाला मन्दिर (राधाकुण्ड)

❀ श्री राधिकायै नमः ❀

श्रीराधाकृपाकटाक्षस्तवराजः

॥ श्री शिवोवोच ॥

मुनीन्द्रवृन्दवन्दिते त्रिलोक-शोकहारिणि,
प्रसन्न-वक्त्रपङ्कजे निकुञ्ज-भू-विलासिनि ।
व्रजेन्द्र-भानु-नन्दिनि व्रजेन्द्र-सूनु-सङ्गते,
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ १ ॥
अशोक-वृक्ष-वल्लरी-वितान-मण्डप-स्थिते,
प्रवालवाल-पल्लव-प्रभाऽरुणाङ्घ्रि-कोमले ।
वराभयस्फुरत्-करे प्रभूत-सम्पदालये,
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ २ ॥

हे श्री वृषभानुनन्दिनी श्रीराधे ! हे शुक-नारदादि मुनिश्रेष्ठ समूह से अभिवन्दते ! हे तीनों लोक के शोक को हरण करने वाली ! हे प्रसन्न-मुख कमल वाली ! हे निकुञ्ज-भूमि में विलास कारिणी ! आप निरन्तर नन्दनन्दन श्री हरि के साथ विहार कर रही हैं। दयामयी आप कब मुझे अपनी कृपा कटाक्ष का पात्र बनाऐंगी ॥ १ ॥

हे राधिके ! अशोक वृक्ष की मनोहर लताओं के द्वारा चँदोआ रूप से आच्छादित निकुञ्ज मण्डप में विराजमान रहने वाली ! हे मूँगा के नवीन कोमल पल्लवों की लालिमा की भाँति कोमल चरण वाली ! हे अभय वर देने में तत्पर शोभमान हस्त कमल वाली ! हे अनन्त सम्पदाओं की आश्रय रूपिणी ! आप कब अपनी कृपा कटाक्ष का पात्र बनाऐंगी ? ॥ २ ॥

अनङ्ग-रङ्ग-मङ्गल-प्रसङ्ग-भंगुरभ्रुवां ,
सविभ्रमं-ससम्भ्रमं दृगन्त-बाण-पातनैः ।
निरन्तरं वशीकृत-प्रतीति-नन्दनन्दने,
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥३॥
तडित्-सुवर्ण-चम्पक-प्रदीप्त-गौर-विग्रहे,
मुखप्रभा-परास्त-कोटि-शारदेन्दुमण्डले ।
विचित्र-चित्र-सञ्चरच्चकोर-शावलोचने,
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ ४ ॥
मदोन्मदाति-यौवने प्रमोद-मान-मण्डिते,
प्रियानुराग-रञ्जिते कला-विलास-पण्डिते ।
अनन्य-धन्य-कुञ्ज-राज्य-काम-केलि-कोविदे,
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ ५ ॥

कामदेव के महा मंगलमय रंग (विनोद) प्रसंग (सम्पर्क) से मनोहर भृकुटियों के नयन कटाक्ष रूप बाणों से विभ्रम तथा संभ्रम के साथ नन्दनन्दन को निरन्तर वश करने की महान् सामर्थ्य (विश्वास) रखने वाली श्रीकिशोरि ! आप कब मुझे अपनी कृपा कटाक्ष का पात्र बनाऐंगी ॥ ३ ॥

हे विद्युत्-सुवर्ण तथा चम्पापुष्प की भाँति देदीप्यमान गौर विग्रह धारिणि ! हे मुख की प्रभा से शरत-कालीन करोड़ चन्द्र मण्डल के गर्व्व खर्व्व (पराजित) करने वाली ! हे विचित्र चित्र वाले चञ्चल चकोर पक्षी के शाबकों (बच्चाओं) के समान चञ्चल नेत्रवाली ! हे श्री राधिके ! आप कब मुझे अपनी कृपा कटाक्ष का पात्र बनाऐंगी ॥ ४ ॥

हे मद (मत्तता) से अति उन्मत्त नवीन यौवन वाली ! हे मानानन्द से विभूषिते ! हे प्रियतम श्रीकृष्णचन्द्र के अनुराग से

अशेष-हाव-भाव-धीर-हीरहार-भूषिते,
प्रभूतशातकुम्भ-कुम्भ-कुम्भि कुम्भ-सुस्तनि ।
प्रशस्त-मन्द-हास्य-चूर्ण-पूर्ण-सौख्यसागरे,
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ ६ ॥
मृणाल-बाल-वल्लरी-तरङ्ग-रङ्ग-दोर्लते,
लताग्र-लास्य-लोल नील-लोचनावलोकने ।
ललल्लुलन्मिलन्मनोज्ञ-मुग्ध-मोहनाश्रिते,
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ ७ ॥
सुवर्णमालिकाञ्चितत्रिरेख-कम्बु-कण्ठगे,
त्रिसूत्र मङ्गलीगुण त्रिरत्न-दीप्ति दीधिति ;

रञ्जिते ! हे अनन्त कला विलास की पण्डिते, हे परम श्रेष्ठ-दुर्लभ-पवित्र निकुञ्ज राज्य की काम-केलि को जानने वाली श्री राधिके ! आप कब मुझे अपनी कृपा-कटाक्ष का पात्र बनाऐंगी ? ॥ ५ ॥

हे अशेष हाव-भाव-धीरता रूपी हीरामणि के हारों से विभूषिते ! हे विशुद्ध, वर्तुल सुवर्ण कलस तथा मदमत्त हथिनी के मस्तक के कुम्भ के समान ऊँचे स्तन मण्डल वाली ! हे मञ्जुल मन्द हास्य रूप चूर्ण से परिपूर्ण सुख-समुद्र-रूपिणी श्री राधिके ! आप कब मुझे अपनी कृपा कटाक्ष का पात्र बनाऐंगी ॥ ६ ॥

हे जल की तरंगों से हिलती हुई कमल नाल की वाललता की भाँति सुन्दर भुजवाली ! हे नृत्यशील, चञ्चल लता के अग्र भाग की नीलता की भाँति नील नयनों से दृष्टिपात करने वाली ! हे मिलते जुलते और प्रेमाकृष्ट होते हुए सुन्दर मोहित-मनमोहन की आश्रिते ! श्री राधिके ! आप कब मुझे अपनी कृपा-कटाक्ष का पात्र बनाऐंगी ॥ ७ ॥

सलोल-नीलकुन्तल-प्रसून-गुच्छं-गुम्फिते,
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ ८ ॥
नितम्बबिम्ब-लम्बमान-पुष्पमेखलागुणे,
प्रशस्तरत्नकिङ्किणी-कलाप-मध्य-मञ्जुले ।
करीन्द्रशुण्डदण्डिका-वरोहसौभगोरुके,
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ ९ ॥
अनेक-मन्त्रनाद-मञ्जु-नूपुरारवस्खलत्,
समाज-राजहंस-वंश-निक्वणातिगौरवे ।
विलोल-हेम-वल्लरी-विडम्बिचारुचङ्क्रमे,
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ १० ॥

हे स्वर्ण मालाओं से युक्त त्रिरेखा से सुशोभित कम्बु (शंख) कण्ठवाली ! हे मंगल गुण वाले त्रिवली सूत्र तथा त्रिरत्न (हीरा-मोती-माणिक्य) अथवा चन्द्रकान्त-इन्द्रकान्त-वैदूर्य्य नामक मणित्रय की मालाओं की दीप्ति से दीप्तवती ! हे दोलायमान नील कुन्तल में प्रसूनों के गुथे हुए गुच्छों वाली हे राधिके ! आप कब मुझे अपनी कृपा कटाक्ष का पात्र बनाऐंगी ॥ ८ ॥

हे वृषभानुनन्दिनी ! हे नितम्बभाग में मनोहर पुष्परचित लम्बायमान रज्जुवत् मेखला (कौंधनी) वाली ! मध्य भाग में बीच बीच में प्रशस्त रत्न किङ्किणी (रत्नजटित क्षुद्र घण्टिका) समूह संयुक्त होने से अत्यन्त मनोहर शोभा को धारण करने वाली ! हे हस्तिराज की सूंड की तरह सुडौल सौभाग्यशील मनोहर जांघें वाली श्री राधिके ! आप कब मुझे अपनी कृपा-कटाक्ष का पात्र बनाऐंगी ? ॥ ९ ॥

हे कृष्णसौभागिनी राधिके ! आपके चरणों में अनेक मन्त्र-मोहन नादों से भी मञ्जुल (मनोहर) नूपुरों के शब्द

ततो लभेत् ।
अनन्त-कोटि-विष्णुलोक-नम्र-पद्मजार्चिताम् ॥ १७ ॥
हिमाद्रिजा-पुलोमजा-विरिञ्चजा-वरप्रदे ।
अपार-सिद्धि-ऋद्धि-दिग्ध सत्पदाङ्गुलिनख्दा॥
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ १८
मखेश्वरि क्रियेश्वरि स्वधेश्वरी सुरेश्वरि,
त्रिवेद-भारतीश्वरि प्रमाण-शासनेश्वरि ।
रमेश्वरि क्षमेश्वरि प्रमोद-काननेश्वरि,
ब्रजेश्वरि ब्रजाधिपे श्रीराधिके नमोऽस्तु ते ॥ १९ ॥

गौरव विद्यमान हैं, जिससे समस्त राजहंश वंश के महामनोहर शब्दावली तिरस्कृत हो जाती है तथा चरण-गति से चञ्चल सुवर्ण लताओं की दोलायमाना गति भी लज्जित होती है । हे एतादृशी कृष्णप्रिया श्री किशोरि ! आप कब मुझे अपनी कृपा-कटाक्ष का पात्र बनाऐंगी ॥ १० ॥

हे श्रीराधिके ! आप के नख-कमल की छटा को अनन्त कोटि विष्णुलोक नत मस्तक से वन्दना करते हैं। आप तो हिमाद्रिजा (पार्व्वती) पुलोमजा (इन्द्राणी शची देवी) विरिञ्चिजा (सरस्वती जी) को वर देने वाली हो । अनन्त सिद्धि-ऋद्धियाँ तो आपके चरण कमलों की अँगुली के नख में विद्यमान हैं । हे एतादृशि किशोरी जू ! आप कब मुझे अपनी कृपा-कटाक्ष का पात्र बनाऐंगी ॥ ११ ॥

हे श्री राधिके ! हे सब प्रकार यज्ञ कर्म्म की स्वामिनि ! हे समस्त कर्म्म की स्वामिनि ! हे आत्म समर्पण कारी स्वधा-शक्ति की मूलरूपा ! हे समस्त देवताओं की ईश्वरी ! हे ऋक्-यजु-साम इन वेदत्रयी तथा वाणी रूपा सरस्वती शक्ति की मूलकारण स्वरूपिणि, हे प्रमाण-प्रमेयादि समस्त वस्तुओं तथा विधि-नियम-

श्री राधाकुण्डोत्पत्तिवर्णनम्

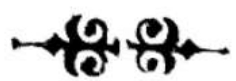

मास्मान् स्पृशादद्य वृषभार्दन हन्त मुग्धा,
घोरोऽसुरोऽयमयि कृष्ण तदप्ययं गौः ।
वृत्रो यथा द्विज इहास्त्ययि निष्कृतिः किं,
शुध्येद्भवांस्त्रिभुवनस्थिततीर्थं कृच्छ्रात् ॥ १ ॥
किं पर्य्यटामि भुवनान्यधुनैव सर्वा,
आनीय तीर्थवितती: करवाणि तासु ।
स्नानं विलोकयत तावदिदं मुकुन्दः,
प्रोच्यैव तत्र कृतवान् वत पार्ष्णिघातम् ॥ २ ॥

"हे वृषमर्दन ! पवित्र रूपिणो हम सब ब्रजयुवतियों का स्पर्श मत कीजिये, क्योंकि आज तुमने सबके प्रत्यक्ष वृष (गौ) का वध किया" इस प्रकार गोपियों का वचन सुन कर श्रीकृष्ण कहने लगे हे मुग्ध-युवतीओं, यह तो बड़ा भारी असुर था। मैंने तो अच्छा ही किया, अनन्तर गोपियाँ कहने लगीं हे कृष्ण ! वह असुर होने पर भी गौ रूप था। जैसा कि वृत्रासुर ब्राह्मण रूप में मौजूद रहा था। गोपियों का इस प्रकार सुखमय वचन श्रवण कर श्रीकृष्ण कहने लगे अच्छा इस दोष का प्रायश्चित तो बताइये, गोपियाँ कहने लगीं-त्रिभुवन के समस्त तीर्थों में स्नानादि करने पर आप पवित्र हो सकते हैं ॥ १ ॥

अनन्तर गर्व्व के साथ श्रीकृष्ण कहने लगे–देखिये समस्त तीर्थ में क्यों भ्रमण करेंगे ? वर्तमान हम सब तीर्थों को यहाँ लाकर उनमें स्नान करते हैं, ऐसा कह कर आपने पार्ष्णि (ऐंढ़ि) घात से एक मनोहर कुण्ड बनाकर उसमें तीर्थों का आह्वान किया ।२।

पातालतो जलमिदं किल भोगवत्या
आयातमत्र निखिला अपि तीर्थसङ्घाः।
आगच्छतेति भगवद्वचसा त एत्य
तत्रैव रेजुरथ कृष्ण उवाच गोपीः ॥ ३ ॥
तीर्थानि पश्यत हरेर्वचसा तवैवं
नैव प्रतीम इति ता अथ तीर्थवर्य्याः।
प्रोचुः कृताञ्जलिपुटा लवणाब्धिरस्मि
क्षीराब्धिरस्मि शृणुतामरदीर्घिकास्मि ॥ ४ ॥
शोणोऽपि सिन्धुरहमस्मि भवामि ताम्र-
पर्णी च पुष्करमहञ्च सरस्वती च।
गोदावरी रविसुता सरयूः प्रयागो
रेवास्मि पश्यत जलं कुरुत प्रतीतम् ॥ ५ ॥

पाताल से भोगवती का तीर्थजल तथा समस्त तीर्थ यहाँ आओ इस प्रकार भगवान् के वचन सुन कर वे सब सूक्ष्मतः प्रादुर्भूत होकर वहाँ विराजमान हुए, अनन्तर श्रीकृष्ण ने गोपियों से कहा ॥ ३ ॥

भो ! तीर्थों को देखिये। गोपियों ने कहा-हे कृष्ण ! बातों से हम विश्वास नहीं करेंगी। तब श्रेष्ठ समस्त तीर्थ मूर्त्तिमान् प्रकट होकर हाथ जोड़ कर कहने लगे "मैं लवण समुद्र हूँ, मैं क्षीरसागर हूँ, सुनिये-मैं सुरधुनी गंगा हूँ, मैं शोण हूँ, मैं सिन्धु हूँ, मैं ताम्रपर्णी हूँ, मैं पुष्करराज हूँ, मैं सरस्वती हूँ, मैं गोदावरी हूँ, मैं कलिन्द तनया यमुना हूँ, मैं सरयू हूँ, मैं प्रयाग हूँ, मैं रेवा हूँ, हमारे तीर्थ जलों को देखिये तथा विश्वास कीजिये ॥ ४-५ ॥

स्नात्वा ततो हरिरति प्रजगल्भ एव
शुद्धः सरोप्यकरवं स्थितसर्वतीर्थम् ।
युष्माभिरात्मजनुषीह कृतो न धर्मः
कोऽपि क्षितावथ सखीर्निजगाद राधा ॥ ६ ।
कार्य्यं मयाप्यतिमनोहरकुण्डमेकं
तस्माद्यतध्वमिति तद्वचनेन ताभिः ।
श्री कृष्णकुण्डतटपश्चिमदिश्यमन्दो
गर्त्तः कृतो वृषभदैत्यखुरैर्व्यलोकि ॥ ७ ॥
तत्रार्द्रमृण्मृदुलगोलतनीः प्रति स्व-
हस्तोद्धृता अनतिदूरगता विधाय ।
दिव्यं सरः प्रकटितं घटिकाद्वयेन
ताभिर्विलोक्य सरसं स्मरेत स्म कृष्णः ॥ ८ ॥

अनन्तर श्रीहरि उनमें स्नान कर अति गर्व्व के साथ बोलने लगे कि हम तो अब शुद्ध हो गये हैं। हमने तो समस्त तीर्थों के विराजमान सरस कुण्ड का निर्म्माण किया है तुम सब ने पृथिवी पर जन्म लेकर अपने इस शरीर से कोई धर्म्म-कर्म्म नहीं किया। इस प्रकार वचन सुन कर श्री राधिका सखियों से कहने लगीं ॥ ६ ॥

मैं भी अभी अति मनोहर एक कुण्ड की रचना करूँगी, अतः तुम सब यत्नशील हो जाओ। इस प्रकार श्री राधा की चेष्टा को देख कर गोपियों ने श्यामकुण्ड की पश्चिम दिशा में वृषभ दैत्य के खुरों से किया हुआ सुन्दर गर्त्त का अवलोकन किया ॥ ७ ॥

उस गर्त्त से सखियों के देखते हुए श्री राधिका ने निज हस्त से गीली मिट्टी, खपरे, कंकर आदि निकाल कर श्याम-

प्रोचे च तीर्थसलिलैः परिपूरयैतन्
मत्कुण्डतः सरसिजाक्षि ! सहालिभिस्त्वम् ।
राधा तदा नननेति जगाद यस्मा-
त्त्वत्कुण्डनीरमुरुगोवधपातकाक्तम् ॥ ९ ॥
आहृत्य पुण्यसलिलं शतकोटिकुम्भैः
सख्यर्व्वुदेन सह मानसजान्हवीतः ।
एतत् सरः स्वमधुना परिपूरयामि
तेनैव कीर्त्तिमतुलां तनवानि लोके ॥ १० ॥
कृष्णेङ्गितेन सहसैत्य समस्ततीर्थ-
सङ्घस्तदीय-सरसो धृतदिव्यमूर्तिः !
तुष्टाव तत्र वृषभानुसुतां प्रणम्य
भक्त्या कृताञ्जलिपुटः स्रवदस्रधारः ॥ ११ ॥

कुण्ड के अनति दूर में दो घड़ी के भीतर मनोहर एक दिव्यातिदिव्य सरोवर का प्रकट किया। परन्तु उसमें जल नहीं उठा। उस समय श्री कृष्ण मन्द-मन्द हँसते हुए आश्चर्यान्वित हुए ॥ ८ ॥

आप कहने लगे हे कमलनयनि ! मेरे कुण्ड के तीर्थ जलों से सखियों के साथ आप अपने कुण्ड को पूरण कीजिये। परन्तु उस समय श्री राधिका नहीं नहीं ऐसा कहती हुई निषेध करने लगीं। आप कहने लगीं-हे हरे ! आपके कुण्ड का जल गोवध पातक से अत्यन्त युक्त है अतः ऐसा नहीं होगा ॥ ९ ॥

मैं स्वयं अर्व्वुद सखियों के साथ शतकोटि घड़ों द्वारा मानसी गङ्गा से पुण्य जल लाकर अभी इस कुण्ड को पूर्ण करूँगी जिससे जगत में मेरी अतुलनीय कीर्त्ति बढ़ेगी ॥ १० ॥

अनन्तर श्री कृष्ण के इसारे से उस समय श्रीमकुण्ड में से समस्त तीर्थ दिव्य मूर्त्ति धारण कर हाथ जोड़ वृषभानुनन्दिनी

देवि ! त्वदीयमहिमानमवैति सर्व-
शास्त्रार्थविन्न च विधिर्न हरो न लक्ष्मीः ।
किन्त्वेक एव पुरुषार्थ-शिरोमणिस्त्वत्
प्रस्वेदमार्जनपरः स्वयमेव कृष्णः ॥ १२ ॥
यश्चारुयावकरसेन भवत्पदाब्ज-
मारज्य नूपुरमहो निदधाति नित्यम् ।
प्राप्य त्वदीय-नयनाब्जतटप्रसादं
स्वं मन्यते परमधन्यतमं प्रहृष्यन् ॥ १३ ॥
तस्याज्ञयैव सहसा वयमाजगाम
तत्पार्ष्णिघात-कृतकुण्डवरे वसामः ।
त्वञ्चेत् प्रसीदसि करोषि कृपाकटाक्षं
तर्ह्येव तर्षविटपी फलितो भवेन्नः ॥ १४ ॥

की स्तुति करने लगे। अत्यन्त भक्ति के कारण उनके नेत्रों से अश्रुधारा बहने लगी ॥ ११ ॥

हे देवि ! आपकी महिमा को समस्त शास्त्रवेत्ता पण्डित गण नहीं जानते हैं। न ब्रह्मा, न देवदेव महादेव, न स्वयं लक्ष्मी ही जानती हैं। परन्तु पुरुषार्थ शिरोमणि रूप, तुम्हारे घर्म्म जल के मार्जन करने वाले एकमात्र स्वयं श्रीकृष्ण ही जानते हैं ॥१२॥

जो श्रीहरि मनोहर यावक रस से आपके चरण कमलों को रञ्जित कर नूपुर पहनाते हैं, वे आज आपके नयन कटाक्ष प्राप्त कर आनन्दित हो अपने को परम धन्यतम मानते हैं ॥१३॥

उनकी आज्ञा से हम सब यहाँ आकर उनके पार्ष्णि घात के द्वारा निर्म्मित इस तीर्थवर (श्याम कुण्ड) में वास कर रहे हैं यदि आप प्रसन्ना होकर कृपाकटाक्ष करेंगी तब हम सब की उत्कण्ठा लता फलवती होगी ॥ १४ ॥

श्रुत्वा स्तुतिं निखिलतीर्थगणस्य तुष्टा
प्राह स्म तर्षमयि वेदयतेति राधा ।
याम त्वदीयसरसीं सफला भवाम
इत्येव नो वर इति प्रकटं तदोचुः ॥ १५ ॥
आगच्छतेति वृषभानुसुता स्मितास्या
प्रोवाच कान्तवदनाब्ज-धृताक्षिकोणा ।
सख्योऽपि तत्र कृतसंमतयः सुखाब्धौ
मग्ना बिरेजुरखिला स्थिरजङ्गमाश्च ॥ १६ ॥
प्राप्य प्रसादमथ ते वृषभानुजायाः
श्रीकृष्णकुण्डगततीर्थवराः प्रसह्य ।
भित्त्वेव भित्तिमतिवेगत एव राधा-
कुण्डं व्यधुः स्वसलिलैः परिपूर्णमेव ॥ १७ ॥

अनन्तर तीर्थों की इस प्रकार स्तुति सुनकर श्री राधा प्रसन्ना हो पूछने लगीं कि-तुम सब को उत्कण्ठा किस वस्तु में है ? वे सब प्रकाश्य रूप से कहने लगे-आप अपने सरोवर में हम सब को आने की आज्ञा दीजिये, उससे हम कृतकृत्य हो जावेंगे। हम सब का यह प्रार्थनीय वर है ।। १५ ॥

अनन्तर वृषभानुनन्दिनी श्रीराधिका कान्त के वदन कमल में अपने नेत्र कोण फिराकर,हँसती हुई "तुम सब मेरे सरोवर में आओ" ऐसा कहने लगीं। सखियों ने इस विषय में सम्मति दी तथा वे सब सुख सागर में निमग्ना हो गयीं। उस समय जड, जङ्गम समस्त सुख सागर में निमग्न होने लगे ।। १६ ॥

इस प्रकार श्रीमती के आदेश प्रसाद को प्राप्त कर कृष्ण-कुण्ड प्राप्त समस्त श्रेष्ठ तीर्थ ने अत्यन्त वेग से हठात् श्याम-

प्रोचे हरिः प्रियतमे ! तव कुण्डमेतन्
मत्कुण्डतोपि महिमाधिकमस्तु लोके।
अत्रैव मे सलिलकेलिरिहैव नित्यं
स्नानं यथा त्वमसि तद्वदिदं सरो मे ॥ १८ ॥

राधाब्रवीदहमपि स्वसखीभिरेत्य
स्नास्याम्यरिष्ट-शतमर्दनमस्तु तस्य ।
योऽरिष्टमर्शनसरस्युरुभक्तिरत्र
स्नायाद्वसन्मम स एव महाप्रियोऽस्तु ॥ १९ ॥

रासोत्सवं प्रकुरुते स्म च एव रात्रौ
कृष्णाम्बुदः कृतमहारसहर्षवर्षः ।

कुण्ड की भित्ति का भेदन कर निज जलों से राधाकुण्ड को परिपूर्ण किया ॥ १७ ॥

अनन्तर श्री हरि कहने लगे हे प्रियतमे ! तुम्हारे यह कुण्ड पृथिवी में मेरे सरोवर से महिमाधिक्य प्राप्त करके विख्यात होगा। आपके इस कुण्ड में ही मेरी नित्य जलक्रीडा होगी। मैं नित्य इसमें स्नान करूँगा। आप जिस प्रकार मेरी अत्यन्त प्रिया हैं ठीक उसी प्रकार यह कुण्ड भी मेरा अत्यन्त प्रिय है ॥ १८ ॥

अनन्तर श्री राधिका कहने लगीं कि–मैं भी निज सखियों के साथ आकर इस में नित्य स्नान करूँगी। जो व्यक्ति इस अरिष्ट संसर्गी सरोवर में अर्थात् राधाकुण्ड में अत्यन्त भक्ति रख कर स्नान, निवासादि करेगा वह मेरा परम प्रिय होगा तथा उसके सौ-सौ अरिष्ट नाश होंगे ॥ १९ ॥

श्रीराधिकाप्रवरविद्युदलंकृतश्री-
स्त्रैलोक्यमध्यवितीकृतदिव्यकीर्त्तिः ॥ २० ॥

(सारार्थदर्शिन्याम्)

आदिवाराहे श्रीगोवर्द्धनपरिक्रमेप्रसंगे राधाकुण्डप्राकट्य-वर्णनम्—

गङ्गायाश्चोत्तरं गत्वा देवदेवस्य चक्रिणः ।
अरिष्टेन समं यत्र महद् युद्धं प्रवर्त्तितम् ॥
घातयित्वा ततरतस्मिन्नरिष्टं वृषरूपिणम् ।
कोपेन पार्ष्णिघातेन महत्यांस्तीर्थं प्रकल्पितम् ॥
वृषभस्य वधो ज्ञेय आत्मनः शुद्धिमिच्छता ।
स्नातस्तत्र तदा कृष्णो वृषं हत्वा सगोपकः ॥
विपाप्मा राधां प्रोवाच कथं भद्रे ! भविष्यसि ।
वृषो हतो मया चायमरिष्टः पापसूचकः ॥

इस प्रकार कुण्ड निर्म्माण करते हुए उस रात्रि में श्री कृष्णघन ने महारस आनन्द वर्षा करते हुए श्री राधिका रूप श्रेष्ठ विद्युत् से अलंकृत होकर रासोत्सव तथा त्रिलोक में अपनी दिव्य कीर्ति का विस्तार किया ॥ २० ॥

—:-❀-:—

आदिवाराह में श्री गोवर्द्धन परिक्रमा वर्णन स्थल में दोनों कुण्डों का उत्पत्ति का वर्णन इस प्रकार है--

मानसी गङ्गा के उत्तर में जाकर देव-देव चक्रधर का अरिष्टासुर के साथ महान् युद्ध हुआ। वहाँ हरि ने वृष रूपी उस अरिष्टासुर को मार कर कोप के साथ पार्ष्णि घात के द्वारा पृथिवी में महान् तीर्थ का प्राकट्य किया। वृषभ का वध हुआ

तत्र राधा समाश्लिष्य कृष्णमक्लृष्टकारिणम् ।
स्वनाम्ना विदितं कुण्डं कृतं तीर्थमदूरतः ॥
राधाकुण्डमिति ख्यातं सर्व्वपापहरं शुभम् ।
अरिष्टराधाकुण्डाभ्यां स्नानात् फलमवाप्नुते ॥
राजसूयाश्वमेधाभ्यां नात्र कार्य्या विचारणा ।
गोहत्या ब्रह्महत्या च पापं क्षिप्रं प्रणश्यति ॥

ऐसा जानकर श्रीहरि अपने को शुद्ध होने की इच्छा कर सखाओं के साथ स्नान कर शुद्ध हो राधा के लिये कहने लगे-हे भद्रे ! मैंने वृषभ को मारा नहीं वह तो अरिष्टासुर था अस्तु आपके वचनानुसार तीर्थ प्राकट्य कर उसमें स्नान कर शुद्ध हुआ हूँ। अब आलिङ्गन दीजिये। अनन्तर असाध्य साध्यकारी अद्भुतकर्म्मा श्रीकृष्ण को आलिङ्गन दे श्री राधिका ने अदूर में निजनाम से विख्यात कुण्ड की रचना की। जो कि राधाकुण्ड इस नाम से प्रसिद्ध है तथा समस्त पापों का हरण करने वाला परम शुभमय है। इन दोनों श्री श्यामकुण्ड-राधाकुण्ड में स्नान करने से समस्त फल मिलते हैं। राजसूय-अश्वमेध की प्राप्ति तो कुछ भी नहीं है। गोहत्या, ब्रह्महत्यादि पाप शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं।

सानुवाद संस्कृत भाषा में—

१.	अर्च्चाविधिः	(संगृहीत)	।)
२.	प्रेमसम्पुटः	(श्रीविश्वनाथचक्रवर्त्तीजीकृत)	।)
३.	भक्तिरसतरङ्गिणी	(श्रीनारायणभट्टजीकृता)	१)
४.	गोवर्द्धनशतक	(श्रीविष्णुस्वामी संप्रदायाचार्य्य श्रीकेशवाचार्य्य कृत)	।)
५.	चैतन्यचन्द्रामृत और सङ्गीतमाधव	(श्रीप्रबोधानन्द-सरस्वतीजी कृत)	१।)
६.	नित्यक्रियापद्धतिः	(संगृहीत)	॥=)
७.	व्रजभक्तिविलासः	(श्रीनारायणभट्टजी कृत)	२॥)
८.	निकुञ्जरहस्यस्तवः	(श्रीमद्रूपगोस्वामी कृत)	
९.	महाप्रभुग्रन्थावली	(श्रीमन्महाप्रभुमुखपद्मविनिर्गता)	।-)
१०.	स्मरणमङ्गलस्तोत्रं	(श्रीमद्रूपगोस्वामिजीकृत)	॥=)
११.	नवरत्नं	(श्रीहरिरामव्यासजी कृत)	=)।
१२.	श्रीगोविन्दभाष्यं	(श्रीपादबलदेवजी कृत)	४॥)
१३.	ग्रन्थरत्नपञ्चकम्		१॥)
	श्रीराधाकृष्णगणोद्देशदीपिका	(श्री श्रीरूपगोस्वामिजी कृता)	
	श्रीगौरगणोद्देशदीपिका	(श्रीकविकर्णपूरजी कृत)	
	श्रीव्रजविलासस्तवः	(श्रीश्रीरघुनाथदासगोस्वामिजी कृत)	
	श्रीसंकल्पकल्पद्रुमः	(श्रीविश्वनाथ चक्रवर्त्तीजी कृत)	
१४.	श्रीमहामन्त्रव्याख्याष्टकम्	(सञ्चित)	
१५.	ग्रन्थरत्नषट्कम्	(सञ्चित)	॥)
१६.	श्रीगोवर्द्धनभट्टग्रन्थावली		
१७.	सहस्रनामत्रयम् अथवा ग्रन्थरत्ननवकम्		
१८.	श्रीनारायणभट्टचरितामृतम्	(श्रीजानकीप्रसाद गोस्वामिकृत)	॥)
१९.	उद्धवसन्देशः	(श्रीमद्रूपगोस्वामिविरचितः)	।=)
२०.	हंसदूतम्	(श्रीमद्रूपगोस्वामिविरचितः)	

गौड़ीयग्रन्थगौरवः-

ब्रजभाषा में प्रकाशित प्राचीन पुस्तकें—

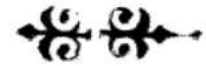

१.	गदाधरभट्टजी की वाणी	॥)
२.	सूरदासमदनमोहनजी की वाणी	॥)
३.	माधुरीवाणी (माधुरीजी कृता)	॥=)
४.	बल्लभरसिकजी की वाणी	।=)
५.	गीतगोविन्दपद (श्रीरामरायजी कृत)	।)
६.	गीतगोविन्द (रसमञ्जरीगोविन्ददासजी कृत)	।)
७.	हरिलीला (ब्रह्मगोपालजी कृता)	=)
८.	श्रीचैतन्यचरितामृत (श्रीबलश्यामजी कृत)	५॥)
९.	वैष्णववन्दना (भक्तनामावली) (वृन्दावनदासजी कृता)	=)
१०.	विलापकुसुमाञ्जलि (वृन्दावनदासजी कृता)	।)
११.	प्रेमभक्तिचन्द्रिका (वृन्दावनदासजी कृता)	।)
१२.	प्रियादासजी की ग्रन्थावली	।=)
१३.	गौराङ्गभूषणमञ्जावली (गौरगनदासजी कृता)	।)
१४.	राधारमणरससागर (मनोहरजी कृता)	।)
१५.	श्रीरामहरिग्रन्थावली (श्रीरामहरिजी कृता)	।-)
१६.	भाषाभागवत (दशम, एकादश, द्वादश) (श्रीरसजानि-वैष्णवदासजी कृत)	
१७.	श्रीनरोत्तमठाकुरमहाशय की प्रार्थना	
१८.	सम्प्रदायबोधनी (कविवरमनोहरजीकृता)	।)

मुद्रक—रमनलाल बंसल, पुष्पराज प्रेस, मथुरा।

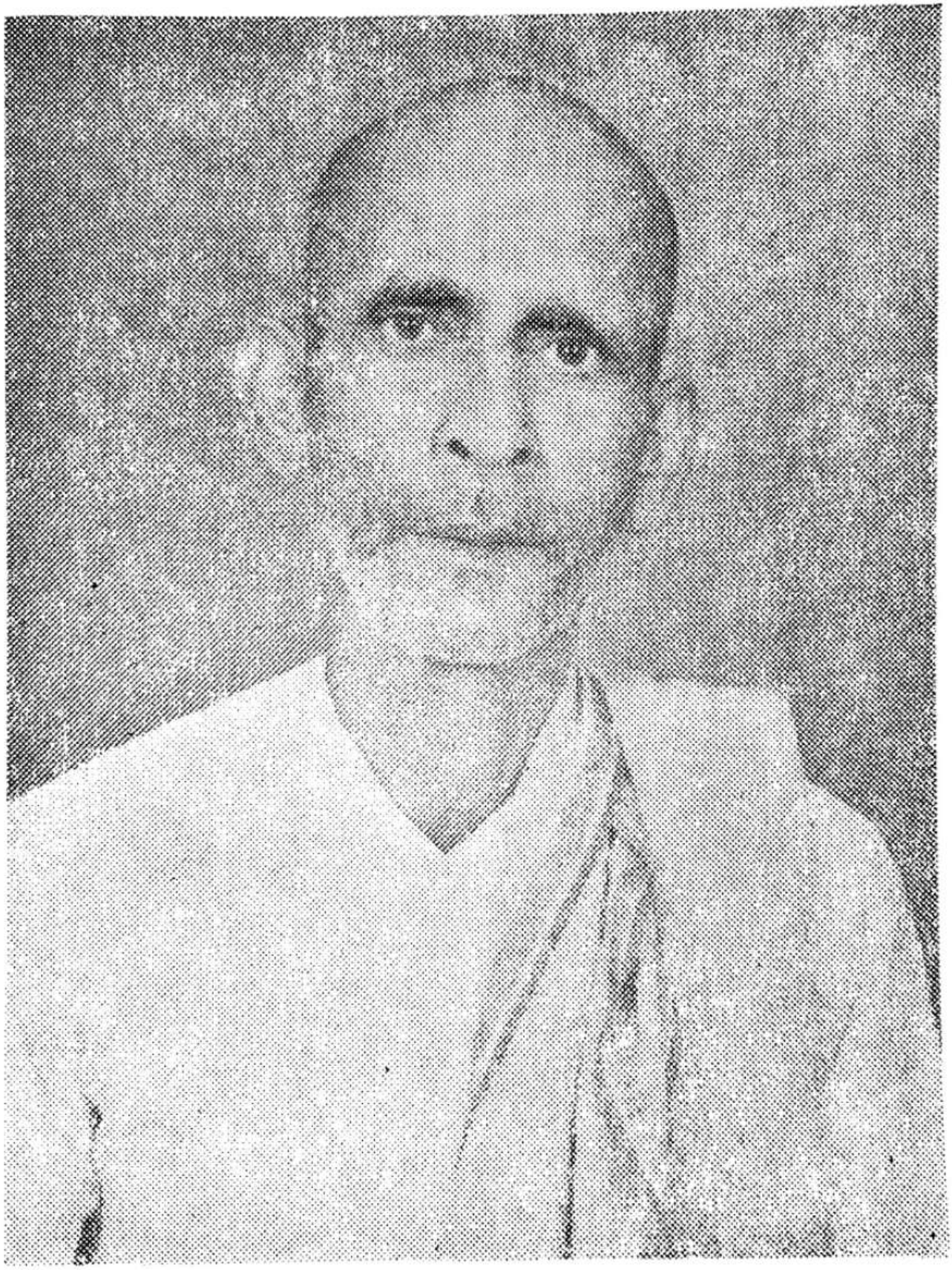

बाबा कृष्णदास जी